ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 217-219**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

ग्रामीण समाज में उच्च शिक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI): अवसर, चुनौतियाँ एवं भविष्य की संभावनाएँ

डॉ0 राजीव कमार श्रीवास्तव, 2. डॉ0 अर्चना श्रीवास्तव

असिस्टेंट प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, श्री सुदृष्टि बाबा पी0 जी0 कालेज, सुदिष्टपुरी–रानीगंज, बलिया, 2. शिक्षा शास्त्र, बलिया (उ0प्र0) भारत भारत

Received-17.08.2026, Revised-25.08.2026, Accepted-03.09.2026, **E-mail:archanasri2610@gmail.com**

सारांशः इक्कीसवीं सदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) शिक्षा के स्वरूप, शिक्षण–पद्धति, शोध, मूल्यांकन तथा ज्ञान के प्रसार को तेजी से प्रभावित कर रही है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में AI आधारित उपकरणों के माध्यम से व्यक्तिगत शिक्षण, त्वरित सूचना–संग्रह, भाषा–अनुवाद, शोध–सहायता, डिजिटल सामग्री निर्माण तथा प्रशासनिक कार्यों को अधिक प्रभावी बनाने की संभावनाएँ उत्पन्न हुई हैं। किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च शिक्षा के संदर्भ में AI का प्रश्न केवल तकनीकी विकास का प्रश्न नहीं है, यह सामाजिक न्याय,डिजिटल समानता, शैक्षिक अवसर, आर्थिक क्षमता और मानवीय विकास से भी जुड़ा हुआ है।

भारत में ग्रामीण उच्च शिक्षा संस्थानों के सामने इंटरनेट कनेक्टिविटी, डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता, विद्युत आपूर्ति, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, डिजिटल साक्षरता, भाषाई बाधाएँ तथा आर्थिक असमानता जैसी समस्याएँ अभी भी महत्वपूर्ण हैं। भारत सरकार से जुड़े शिक्षा–विमर्श में भी ग्रामीण और शहरी भारत के बीच डिजिटल विभाजन तथा सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित समूहों के सामने आने वाली तकनीकी बाधाओं को रेखांकित किया गया है। AI इन समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकती है, लेकिन यदि AI तक पहुँच स्वयं असमान रही तो यह मौजूदा शैक्षिक असमानताओं को और बढ़ा सकती है। UNESCO ने भी चेतावनी दी है कि इंटरनेट, उपकरण और डिजिटल कौशल तक असमान पहुँच AI विभाजन को जन्म दे सकती है और ग्रामीण तथा अन्य वंचित समूह विशेष रूप से प्रभावित हो सकते हैं।

यह लेख ग्रामीण उच्च शिक्षा में AI की उपयोगिता, संभावनाओं, सामाजिक–आर्थिक प्रभावों, चुनौतियों तथा नीतिगत उपायों का विश्लेषण करता है। लेख का मूल तर्क यह है कि ग्रामीण उच्च शिक्षा में AI को शिक्षक का विकल्प न बनाकर शिक्षक और विद्यार्थी की क्षमता बढ़ाने वाली तकनीक के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। इसके लिए डिजिटल आधारभूत संरचना, स्थानीय भाषाओं में AI, शिक्षक प्रशिक्षण, AI साक्षरता, डेटा सुरक्षा, नैतिक मानदंड और समावेशी नीतियाँ आवश्यक हैं।

कुंजीभूत शब्द– ग्रामीण उच्च शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, AI, डिजिटल विभाजन, जनरेटिव AI, डिजिटल साक्षरता, समावेशी शिक्षा, ग्रामीण विकास, उच्च शिक्षा, तकनीकी समानता।

प्रस्तावना– शिक्षा किसी भी समाज के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास का आधार है। उच्च शिक्षा व्यक्ति को केवल डिग्री प्रदान नहीं करती, बल्कि उसके ज्ञान, कौशल, तार्किक क्षमता, रोजगार– योग्यता और सामाजिक चेतना का विकास करती है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में उच्च शिक्षा का विकास ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक परिवर्तन से गहराई से जुड़ा हुआ है। भारत में विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों का विस्तार हुआ है, फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा की उपलब्धता और उपयोगिता एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है। ग्रामीण विद्यार्थियों का एक बड़ा वर्ग आर्थिक कठिनाइयों, सीमित डिजिटल संसाधनों, भाषा संबंधी समस्याओं और तकनीकी सुविधाओं की कमी का सामना करता है। शिक्षा मंत्रालय से संबंधित दस्तावेजों में भी सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित समूहों के लिए उच्च शिक्षा में वित्तीय सहायता, डिजिटल विभाजन और भाषाई तथा भौगोलिक बाधाओं को महत्वपूर्ण मुद्दों के रूप में रेखांकित किया गया है।

UNESCO के अनुसार AI शिक्षा में पहुँच, व्यक्तिगत शिक्षण और शैक्षिक प्रबंधन के नए अवसर पैदा कर सकती है, लेकिन इसके साथ असमानता, गोपनीयता, सुरक्षा, नैतिकता और शासन संबंधी जोखिम भी जुड़े हैं।[1] इसलिए ग्रामीण उच्च शिक्षा में AI को केवल तकनीकी उपकरण के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। इसका मूल्यांकन इस आधार पर करना आवश्यक है कि यह ग्रामीण विद्यार्थी, शिक्षक और संस्थान के लिए कितनी सुलभ, उपयोगी, सुरक्षित, स्थानीय और समावेशी बन सकती है।

ग्रामीण उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति और चुनौतियाँ– ग्रामीण उच्च शिक्षा का स्वरूप शहरी उच्च शिक्षा संस्थानों से अनेक मामलों में अलग है। ग्रामीण महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि विविध होती है। अनेक विद्यार्थी प्रथम पीढ़ी के उच्च शिक्षा प्राप्तकर्ता होते हैं। ऐसे विद्यार्थियों के लिए कॉलेज तक पहुँचना, पुस्तकें खरीदना, इंटरनेट डेटा का खर्च उठाना और आधुनिक डिजिटल उपकरण प्राप्त करना कठिन हो सकता है।[2]

डिजिटल आधारभूत संरचना– AI आधारित शिक्षा के लिए इंटरनेट, कंप्यूटर अथवा स्मार्टफोन तथा पर्याप्त विद्युत आपूर्ति आवश्यक है। यदि विद्यार्थी के पास केवल सीमित डेटा वाला मोबाइल फोन है, तो वह जटिल AI अनुप्रयोगों का प्रभावी उपयोग नहीं कर पाएगा। ग्रामीण भारत में इंटरनेट उपयोग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, लेकिन शिक्षा संस्थानों में डिजिटल बुनियादी ढाँचें की गुणवत्ता और व्यक्तिगत कंप्यूटरों की उपलब्धता को लेकर चुनौतियाँ बनी हुई हैं। UNESCO के एक भारत–संबंधी दस्तावेज में मोबाइल इंटरनेट की व्यापकता के साथ–साथ कंप्यूटर और शैक्षिक संस्थानों की डिजिटल सुविधाओं की सीमाओं को रेखांकित किया गया है।[3]

डिजिटल साक्षरता– AI का प्रभावी उपयोग केवल इंटरनेट उपलब्ध होने से संभव नहीं है। विद्यार्थी और शिक्षक को यह भी पता होना चाहिए कि AI से प्रश्न कैसे पूछा जाए, प्राप्त उत्तर की सत्यता कैसे जाँची जाए और AI द्वारा उत्पन्न सामग्री की सीमाएँ क्या हैं।

भाषा की समस्या– भारत में उच्च शिक्षा मुख्यतः अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं दोनों में संचालित होती है। ग्रामीण विद्यार्थियों का एक बड़ा वर्ग हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अध्ययन करता है। इसलिए यदि AI उपकरण मुख्यतः अंग्रेजी–केंद्रित होंगे तो ग्रामीण विद्यार्थियों को अपेक्षित लाभ नहीं मिल सकेगा।

UNESCO ने Gen AI के संदर्भ में स्थानीय, अल्पसंख्यक और स्वदेशी भाषाओं की विविधता को संरक्षित करने तथा बहुभाषी AI प्रणालियों के विकास पर जोर दिया है।[4]

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता– AI शिक्षक का विकल्प नहीं है, बल्कि ग्रामीण महाविद्यालयों में AI का सफल प्रयोग तभी संभव है जब शिक्षक AI की क्षमताओं और सीमाओं से परिचित हों। शिक्षक को यह समझना होगा कि AI को पाठ–योजना, अभ्यास, मूल्यांकन, शोध और व्यक्तिगत सहायता में किस प्रकार इस्तेमाल किया जा सकता है।[5]

ग्रामीण उच्च शिक्षा में AI की उपयोगिता– व्यक्तिगत शिक्षणः ग्रामीण विद्यार्थियों में सीखने की गति, पूर्व ज्ञान और विषयगत कठिनाइयाँ अलग–अलग होती हैं। AI आधारित प्रणालियाँ विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुसार अलग–अलग स्तर के प्रश्न, उदाहरण और अभ्यास उपलब्ध करा सकती हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी विद्यार्थी को अर्थशास्त्र में मुद्रास्फीति की अवधारणा समझने में कठिनाई हो रही है, तो AI उसी विषय को सरल हिंदी में, उदाहरणों सहित और अलग–अलग स्तरों पर समझा सकती है। इससे शिक्षक के अतिरिक्त विद्यार्थी को एक डिजिटल अध्ययन–सहायक उपलब्ध हो सकता है।

24×7 शैक्षिक सहायता– ग्रामीण महाविद्यालयों में प्रत्येक विषय के विशेषज्ञ शिक्षक की उपलब्धता हमेशा संभव नहीं होती। AI चैटबॉट और डिजिटल सहायक सामान्य शैक्षणिक प्रश्नों में विद्यार्थियों की सहायता कर सकते हैं। हालाँकि AI द्वारा दिए गए उत्तरों को अंतिम अथवा पूर्णतः विश्वसनीय मानना उचित नहीं है। शिक्षक और विश्वसनीय स्रोतों से सत्यापन आवश्यक है।[6]

अध्ययन सामग्री का निर्माण– AI की मदद से शिक्षक, पाठ्य–सारांश, प्रश्न बैंक, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, अभ्यास–पत्र, चर्चा के विषय, पाठ–योजना, उदाहरण और केस–स्टडी तैयार कर सकते हैं। इससे शिक्षकों के समय का अधिक प्रभावी उपयोग हो सकता है।

भाषा–अनुवाद– AI ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद को आसान बना सकती है। उच्च शिक्षा की गुणवत्तापूर्ण सामग्री को हिंदी, भोजपुरी, मैथिली, बंगाली, मराठी, तमिल आदि भाषाओं में समझने में AI सहायक हो सकती है।[7]

शोध में सहायता– ग्रामीण महाविद्यालयों में शोध–संसाधन सीमित हो सकते हैं। AI विद्यार्थियों को शोध–विषय चयन, शोध–प्रश्न निर्माण, साहित्य की प्रारंभिक समझ, डेटा के संगठन और लेखन की संरचना बनाने में सहायता कर सकती है, लेकिन AI से प्राप्त संदर्भों और तथ्यों का स्वतंत्र सत्यापन आवश्यक है। AI द्वारा कभी–कभी गलत, काल्पनिक संदर्भ भी उत्पन्न किए जा रहे हैं।

शिक्षकों के लिए AI की भूमिका– ग्रामीण उच्च शिक्षा में AI का एक महत्वपूर्ण पक्ष शिक्षक–सशक्तीकरण है। शिक्षक AI की सहायता से अपने विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप अलग–अलग प्रकार की शिक्षण सामग्री बना सकते हैं। उदाहरण के लिए एक ही विषय के लिए वे शुरुआती, मध्यम और उन्नत स्तर की सामग्री तैयार कर सकते हैं। AI विद्यार्थियों के प्रदर्शन से संबंधित डेटा के विश्लेषण में भी सहायता कर सकती है। इससे शिक्षक यह पहचानने में सक्षम हो सकते हैं कि किन विषयों में विद्यार्थियों को अधिक कठिनाई हो रही है।

ग्रामीण विद्यार्थियों पर AI का प्रभाव– सकारात्मक प्रभावः AI ग्रामीण विद्यार्थियों को ज्ञान के व्यापक संसार से जोड़ सकती है। विद्यार्थी स्थानीय कॉलेज में रहते हुए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की शैक्षिक सामग्री तक पहुँच सकते हैं। इसके प्रमुख प्रभाव निम्न हैं– सीखने के अवसरों में विस्तार, व्यक्तिगत अध्ययन की सुविधा, भाषा संबंधी बाधाओं में कमी, शोध क्षमता में वृद्धि, डिजिटल कौशल का विकास, रोजगारपरक कौशल में वृद्धि, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायता, रचनात्मकता और समस्या–समाधान क्षमता के विकास की संभावना।[9] साथ ही सामाजिक प्रभाव की दृष्टिकोण से देखा जाय तो ग्रामीण युवाओं के लिए उच्च शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का माध्यम नहीं है, बल्कि यह परिवार और समुदाय के सामाजिक परिवर्तन में भी भूमिका निभाती है। यदि ग्रामीण विद्यार्थी AI, डेटा एनालिटिक्स, डिजिटल मार्केटिंग, प्रोग्रामिंग, कृषि–तकनीक और अन्य नए कौशल सीखते हैं, तो वे स्थानीय अर्थव्यवस्था में नई गतिविधियाँ उत्पन्न कर सकते हैं। इस प्रकार AI ग्रामीण उच्च शिक्षा को ग्रामीण विकास से जोड़ने का माध्यम बन सकती है।

AI और ग्रामीण रोजगार– AI आधारित अर्थव्यवस्था में रोजगार के स्वरूप बदल रहे हैं। इसलिए ग्रामीण उच्च शिक्षा संस्थानों को केवल पारंपरिक डिग्री प्रदान करने के बजाय विद्यार्थियों को भविष्य के कौशल से जोड़ना आवश्यक है। AI के साथ निम्न कौशल महत्वपूर्ण हो सकते हैं– डेटा साक्षरता, डिजिटल संचार, कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, डेटा विश्लेषण, AI literacy, साइबर सुरक्षा की आधारभूत समझ, डिजिटल उद्यमिता, समस्या समाधान, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता।

UGC के Institutional Development Plan में भी उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में AI तथा अन्य उभरती तकनीकों से संबंधित कौशलों को शामिल करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।[10]

ग्रामीण महाविद्यालय स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार AI आधारित रोजगारपरक पाठ्यक्रम विकसित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए कृषि–आधारित क्षेत्रों में AI और स्मार्ट कृषि, ग्रामीण उद्योग क्षेत्रों में AI और उद्यमिता, तथा पर्यटन क्षेत्रों में AI और डिजिटल पर्यटन प्रबंधन जैसे विषय विकसित किए जा सकते हैं।

AI से उत्पन्न प्रमुख चुनौतियाँ– AI के अनेक लाभों के बावजूद ग्रामीण उच्च शिक्षा में इसके उपयोग से कई गंभीर प्रश्न उत्पन्न होते हैं।

डिजिटल विभाजनः यदि शहरी विद्यार्थी अत्याधुनिक AI उपकरणों का प्रयोग करते हैं और ग्रामीण विद्यार्थियों के पास केवल सीमित इंटरनेट और मोबाइल उपलब्ध है, तो शैक्षिक असमानता बढ़ सकती है। UNESCO ने स्पष्ट रूप से कहा है कि डिजिटल बहिष्करण AI विभाजन को बढ़ा सकता है और ग्रामीण आबादी विशेष रूप से प्रभावित हो सकती है।

डेटा गोपनीयताः AI प्लेटफॉर्म पर विद्यार्थी व्यक्तिगत जानकारी, शैक्षणिक रिकॉर्ड या अन्य डेटा साझा कर सकते हैं। इसलिए डेटा संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

गलत सूचनाः AI हमेशा सही उत्तर नहीं देती। कभी–कभी वह गलत तथ्य, गलत संदर्भ अथवा भ्रामक जानकारी प्रस्तुत कर सकती है। इसलिए AI literacy के साथ information literacy भी आवश्यक है।

नकल और शैक्षणिक ईमानदारीः यदि विद्यार्थी बिना समझे AI से असाइनमेंट, निबंध या शोध सामग्री तैयार करवाते हैं, तो उनकी मौलिक सोच प्रभावित हो सकती है। UNESCO ने Gen AI के संदर्भ में मानव एजेंसी की रक्षा पर जोर दिया है और चेतावनी दी है कि AI पर अत्यधिक निर्भरता बौद्धिक कौशल के विकास को प्रभावित कर सकती है।

शिक्षक की भूमिका में परिवर्तनः AI के कारण शिक्षक की भूमिका समाप्त नहीं होगी, बल्कि बदल सकती है। शिक्षक को केवल जानकारी देने वाले व्यक्ति की बजाय मार्गदर्शक, विश्लेषक, परामर्शदाता और सीखने का संयोजक बनना होगा।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

ग्रामीण उच्च शिक्षा में AI के प्रभाव–

शैक्षिक प्रभावः ।ᖮ शिक्षण को अधिक व्यक्तिगत, संवादात्मक और लचीला बना सकती है। ग्रामीण विद्यार्थी अपनी गति से अध्ययन कर सकते हैं।

सामाजिक प्रभावः ।ᖮ तक समान पहुँच ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के बीच ज्ञान की दूरी कम करने में सहायक हो सकती है। इसके विपरीत असमान पहुँच सामाजिक विभाजन को बढ़ा सकती है।

आर्थिक प्रभावः ।ᖮ कौशल ग्रामीण युवाओं को डिजिटल अर्थव्यवस्था से जोड़ सकते हैं। इससे फ्रीलांसिंग, डिजिटल सेवाओं, ऑनलाइन उद्यमिता तथा स्थानीय व्यवसायों में नए अवसर पैदा हो सकते हैं।

सांस्कृतिक प्रभावः भारतीय भाषाओं में ।ᖮ आधारित सामग्री ग्रामीण विद्यार्थियों को अपनी भाषा और संस्कृति के साथ उच्च शिक्षा से जोड़ सकती है। इसलिए ।ᖮ का विकास केवल अंग्रेजी–केंद्रित नहीं होना चाहिए।

लैंगिक प्रभावः यदि ग्रामीण छात्राओं को समान डिजिटल संसाधन और प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाए, तो ।ᖮ उनके शैक्षिक और व्यावसायिक अवसरों का विस्तार कर सकती है। लेकिन उपकरण और इंटरनेट की असमान उपलब्धता लैंगिक डिजिटल विभाजन को भी बढ़ा सकती है।

नीतिगत सुझाव– ग्रामीण उच्च शिक्षा में AI के प्रभावी और समान उपयोग के लिए निम्न कदम आवश्यक हैं–

1. प्रत्येक ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थान में डिजिटल आधारभूत संरचना को मजबूत किया जाए।
2. विद्यार्थियों को कम लागत या निःशुल्क AI और डिजिटल शिक्षण संसाधनों तक पहुँच उपलब्ध कराई जाए।
3. AI साक्षरता को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए।
4. स्थानीय और भारतीय भाषाओं में AI आधारित शैक्षिक सामग्री के विकास को प्रोत्साहित किया जाए।
5. शिक्षकों के लिए नियमित AI प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
6. AI आधारित शिक्षा में डेटा सुरक्षा और गोपनीयता के स्पष्ट मानदंड विकसित किए जाएँ।
7. AI के उपयोग के साथ आलोचनात्मक चिंतन और मौलिक लेखन को प्रोत्साहित किया जाए।
8. ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए सामुदायिक AI एवं डिजिटल लर्निंग सेंटर विकसित किए जाएँ।
9. उच्च शिक्षा संस्थानों और स्थानीय उद्योगों के बीच AI–कौशल आधारित सहयोग स्थापित किया जाए।
10. AI के प्रभाव का नियमित मूल्यांकन किया जाए– विशेष रूप से यह देखने के लिए कि इससे वास्तविक सीखने के परिणामों में सुधार हो रहा है या केवल डिजिटल उपकरणों का उपयोग बढ़ रहा है।

निष्कर्ष– ग्रामीण उच्च शिक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का संबंध आने वाले वर्षों में भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होने वाला है। AI ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए ज्ञान, कौशल और रोजगार के नए अवसर खोल सकती है। इसके माध्यम से गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री, व्यक्तिगत शिक्षण, भाषा–अनुवाद, शोध–सहायता और डिजिटल कौशल का विकास संभव है, लेकिन AI को ग्रामीण उच्च शिक्षा की सभी समस्याओं का स्वतः समाधान मानना उचित नहीं होगा। यदि इंटरनेट, उपकरण, विद्युत, डिजिटल कौशल और प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं, तो AI आधारित शिक्षा का लाभ सीमित रहेगा। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि तकनीकी असमानता पहले से मौजूद सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को बढ़ा सकती है।

अतः ग्रामीण उच्च शिक्षा में AI का उद्देश्य केवल "तकनीकी आधुनिकीकरण" नहीं, बल्कि शैक्षिक समानता और मानव क्षमता का विस्तार होना चाहिए। AI शिक्षक का स्थान लेने के बजाय शिक्षक को अधिक प्रभावी बनाए, विद्यार्थी को अधिक स्वायत्त बनाए और ग्रामीण संस्थानों को अधिक सक्षम बनाए, ऐसी दिशा अधिक उपयोगी होगी। UNESCO का मानव–केंद्रित दृष्टिकोण भी यही संकेत देता है कि AI को शिक्षा में इस प्रकार अपनाया जाना चाहिए जिससे समानता, समावेशन, मानव एजेंसी, भाषाई विविधता और अधिकारों की रक्षा हो। अंततः ग्रामीण भारत के लिए AI की सफलता इस बात से निर्धारित नहीं होगी कि कितने कॉलेजों में AI उपकरण स्थापित किए गए हैं, बल्कि इससे होगी कि कितने ग्रामीण विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण ज्ञान, डिजिटल कौशल, स्वतंत्र चिंतन और भविष्य के रोजगार के अवसर वास्तव में प्राप्त हुए। इसलिए ग्रामीण उच्च शिक्षा में AI का भविष्य तकनीक और मानवता के संतुलित समन्वय में निहित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. UNESCO, (2023). Guidance for Generative AI in Education and Research. Paris: UNESCO.
2. UNESCO, (2021). AI and Education: Guidance for Policy&makers. Paris: UNESCO.
3. UNESCO, (2025). AI and Education: Protecting the Rights of Learners. Paris: UNESCO.
4. UNESCO, (2025). AI and the Future of Education: Disruptions, Dilemmas and Directions.
5. University Grants Commission (UGC), Government of India. Guidelines for Institutional Development Plans for Higher Education Institutions.
6. Ministry of Education, Government of India. National Education Policy 2020. New Delhi: Government of India.
7. Ministry of Education, Government of India. Akhil Bharatiya Shiksha Samagam: Outcome Documents.
8. UNESCO, Artificial Intelligence and the Futures of Learning. UNESCO Digital Education.
9. Holmes, W., Bialik, M. – Fadel, C. (2019). Artificial Intelligence in Education: Promises and Implications for Teaching and Learning. Boston: Center for Curriculum Redesign.
10. Selwyn, N. (2019). Should Robots Replace Teachers\ AI and the Future of Education. Cambridge: Polity Press.

*****